ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE-2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Receivedon 19th Nov 2017, Revised on 28th Nov 2017; Accepted 30th Nov 2017

आलेख

विकास एवं पर्यावरण ह्रास

*** डा.हेमन्त मंगल, व्याख्याता एवं बंशीधर झाझड़िया**, शोधार्थी,
भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चुरू
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
Email - bansidharjhajhria@gmail.com, Mobile- 9664345535, 9828889286

मुख्य शब्द *– पर्यावरण, सभ्यता, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण संतुलन आदि।*

जनसंख्या पर्यावरण और विकास के आपसी संबंध निरन्तर बदलते रहे है। सभ्यता का विकास और पर्यावरण का अटूट रिश्ता है जैसे–जैसे सभ्यता का विकास होता गया वैसे–वैसे ही पर्यावरण का ह्रास होता गया। कृषि और उद्योगों का विकास मानव की दो बड़ी उपलब्धियाँ है। इन उपलब्धियों का पर्यावरण पर बुरा प्रभाव ही पड़ा है। 19 वीं शताब्दी में विश्व स्तर पर औद्योगिक क्रान्ति से मनुष्य आधुनिक प्रौद्योगिकी से लैश होकर सर्वाधिक शक्तिशाली पर्यावरणीय प्रक्रम के रूप में उभकर सामने आया है। अब वह भौतिक पर्यावरण को बड़े पैमाने पर परिवर्तित करने में समर्थ हो गया है जिसका परिणाम पर्यावरण ह्रास हैं विकास एवं पर्यावरण ह्रास एक ही सिक्के के दो पहलू है। आधुनिक प्रौद्योगिकी से प्रगति तथा मनुष्य के आर्थिक क्रियाकलापों में वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में ओर तेजी आयी है। उन सब का परिणाम यह हुआ हैं कि भौतिक पर्यावरण के कुछ संघटकों में इतना अधिक परिवर्तन हो गया हैं कि उसकी क्षतिपूर्ति भौतिक पर्यावरण के अन्तः निर्मित होमियोस्टेटिक क्रियाविधि द्वारा संभव नहीं है। पर्यावरण ह्रास के बीज विकासशील देशों की गरीबी और विकसित देशों के अत्यधिक उपभोग में छिपे हैं। इस तरह पर्यावरण का ह्रास और विकास साथ–साथ चल रहे है।

21 वीं सदी का मानव विकास की चकाचौंध में पर्यावरण संतुलन को विकृत कर रहा है जबकि यह पर्यावरण द्वारा दीर्घकालीन समय तक वहनीय नहीं हैं। आर्थिक समाज (आधुनिक समाज) इतना संवेदनशील हो गया हैं कि प्रकृति उसके लिए उपभोग की वस्तु हैं। इस अवधारणा के चलते आज मानव के सामने अस्तित्व बचाव का प्रश्न आ खड़ा हुआ है। औद्योगिक समाज का मानव विकास के पहलु को सर्वोपरी रखकर अपनी तकनीकी उपब्धियों से पर्यावरण में अपेक्षित परिवर्तन में विश्वास रखता है। वस्तुतः आर्थिक मानव अपने ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी उपकरणों से सुसज्जित के बल पर विकास की दौड़ में पर्यावरण में अपेक्षित परिवर्तन कर रहा हैं जिसका नतीजा पर्यावरण ह्रास हैं और परिणाम भी खुद भुगत रहा है। ऐसे समाज में आर्थिक मानव और तकनीकी मानव का प्राधान्य हैं जो प्रकृति को भोग्या के रूप में उपयोग करते हैं। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किसी भी सीमा को स्वीकार नहीं करते है फलतः ऐसे समाज में बिगड़ते संबंध पर्यावरण ह्रास के कारण बनते जा रहे है।

आज अम्लीय वर्षा, ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन अवक्षय, ऊर्जा संकट, जल–प्रदूषण, वायु–प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा–प्रदूषण, स्थल–प्रदूषण, और संसाधनों का तीव्र गति से ह्रास सामान्य चर्चा के विषय बन गये है। स्पष्ट हैं कि विकास की प्रक्रिया कुछ क्षेत्रों में मानवीय क्षमता के अत्यधिक निवेश से पर्यावरण के तथ्यों का अधिकाधिक शोषण हुआ मनुष्य ने जहाँ कम समय में चरम विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। वहाँ पुनः विकास के लिए संसाधनों की कमी आने लगी है दूसरी और विभिन्न पर्यावरणीय तथ्यों के अत्यधिक ह्रास से पारिस्थितिकीय संतुलन भी बिगड़ने लगा हैं जिससे मनुष्य के अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है।

वर्तमान समय में आधुनिकीकरण और औद्योगिकीकरण विशेष रूप से न्यूक्लीय ऊर्जा के विकास ने जैव मण्डल को तेजी से परिवर्तित करने के साधन प्रदान किये है। दुर्भाग्यवश राजनैतिक संस्थायें उस गति के साथ विकसित नहीं हुई जिस गति से पर्यावरण को अवक्रमित करने की हमारी योग्यता विकसित हुई हैं। वास्तव में हमने पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने की कोशिश करने वाली राजनैतिक संस्थाओं को प्रचलन से बाहर कर दिया है। पर्यावरणीय अवक्रमण अंतर्राष्ट्रीय दृश्य घटना हैं। कई अंतर्राष्ट्रीय रूप से प्रसद्धि संरचनायें जैसे कि यूनान में पार्थेनान, रोम में कोलिसियम, भारत का ताजमहल और वांशिगटन में लिंकन स्मारक वातावरण की बिगड़ती हुई स्थितियों के कारण क्षतिग्रस्त होती जा रही है। ये संरचानायें वायु में अम्लीय प्रदूषण द्वारा धीर–धीरे नष्ट हो रही हैं। इन मानव निर्मित संरचनाओं से भी ज्यादा भंगूर पृथ्वी के प्राकृतिक तंत्र हैं विश्व भर में जैव विविधता लुप्त हो रही हैं, महासागर प्रदूषित हो रहे हैं और जो वायु श्वास के रूप में ग्रहण करते है वह भी संदूषित हो रही है। ये प्राकृतिक प्रदूषक विशेष रूप से वायु और जल में हैं। अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से बंधे नहीं है। यह समस्या हल करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयत्न की आवश्यकता हैं। इस रंगमंच पर भी विकासशील एंव विकसित राष्ट्र दो खेमों में बंटे हुये हैं। विकसित देश अपने आर्थिक और औद्योगिक प्रगति को लेकर किसी भी रूप में अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण नहीं चाहते है। अंतर्राष्ट्राय पर्यावरणीय कानून का नया ढ़ांचा तैयार करना चाहिए।

पर्यावरण अवनयन के लिये जिम्मेदार प्रक्रमों एवं कारणों से भावी जीवन के प्रति निराशा जागृत होती हैं तथा यह भी आभास होता हैं कि सभी विकासीय कार्य प्रकृति तथा पर्यावरण के विपरीत हैं यदि हमें वर्तमान समाज को विकसित करना हैं तथा बढ़ती जनसंख्या की मांगों को पूरा करना हैं तो विकास की गति को बनाये रखना होगा। परन्तु विकास कार्य पर्यावरण एवं मानव समुदाय के अस्तित्व की कीमत पर नहीं किया जाना चाहिए।

पर्यावरणीय व पारिस्थितिकीय परिवर्तनों के कारण उत्पन्न पर्यावरण संकट आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी मनुष्य की विकासीय प्रक्रियाओं का परिणाम हैं। वास्तव में यदि एक तरफ सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तकनीकी एवं प्रौद्योगिकीय विकास हुये हैं तो दूसरी तरफ विकट पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय समस्याएं भी उत्पन्न हुई हैं मनुष्य के कार्यो द्वारा पर्यावरण में तेजी से हो रहे परिवर्तनों तथा उनसे जनित पर्यावरण अवनयन के भयावह रूप को देखते हुए त्णिकेंउंदद (1976) ने कहा कि ''मानव दौड़ हाथ में ग्रेनेड लिये बंदर के समान हैं कोई यह नहीं जानता हैं कि वह कब ग्रेनेड से पिन खींच लेगा तथा विश्व तहस–नहस हो जायेगा।

मानव कल्याण प्रगति के सतत् पोषणीय विकास पर बल देना अति महत्त्वपूर्ण है। यह एक समन्वित विकास की प्रक्रिया हैं। जो कि एक ऐसा विकास हैं जिसमें विभिन्न पर्यावरणीय तथ्यों का मानव द्वारा इस प्रकार उपयोग किया जाये कि पारिस्थितिकीय संतुलन भी बना रहे और मानव अपना विकास भी करता रहे। वस्तुतः सतत् पोषणीय विकास भावी पीढ़ीयों के लिए संरक्षण का आहवान करता हैं जो सहभागिता और न्याय पर आधारित एक नवीन संकल्पना है।

संदर्भ

1. पर्यावरणीय समस्याएं, विधि और प्रौद्योगिकी - एक भारतीय परिप्रेक्ष्य. रमेश चन्द्रप्पा और रवि.डी.आर, रिसर्च इंडिया प्रकाशन, दिल्ली, 2009, ISBN 978-81-904362-5-0
2. *जनसंख्या संदर्भ ब्यूरो*, 2001
3. रसेल होपफेनबर्ग और डेविड पिमेंटेल ह्युमन पॉप्युलेशन नंबर्स एस अ फंक्शन ऑफ़ फ़ूड सप्लाईoilcrash.com
4. नैशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी. 1995. पानी: आशा की एक कहानी. वॉशिंगटन (डीसी (DC)): नैशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी
5. द पॉलिटीक्स ऑफ़ टॉइलेट्स, *बोलोजी*
6. मुंबई स्लम: धारावी, *नैशनल ज्योग्राफिक*, मई 2007
7. *कंट्री प्रोफाइल: भारत* . कांग्रेस कंट्री स्टडीज के पुस्तकालय. दिसंबर 2004. 18 मई 2008 को अभिगम. http://lcweb2.loc.gov/frd/cs/profiles/India.pdf.
8. ए.एस. पराशर द्वारा लुधियाना हेडिंग फॉर अ भोपाल-लाइक ट्रेजडी पंजाब रिवर्स आर नाउ हेविली पल्युटेड. ट्रिब्यून, अगस्त 1997.
9. "Buddha Nullah the toxic vein of Malwa". *Indian Express*. May 21, 2008.
10. "A special report on India: Creaking, groaning: Infrastructure is India's biggest handicap". The Economist. 11 दिसम्बर 2008.
11. स्पेशल रिपोर्ट: प्यूट्रिड रिवर्स ऑफ़ सलज: देल्ही ब्यूरोक्रैट्स बिकर ओवर कोलेरा एंड द रोल ऑफ़ सिटी ड्रेस एंड स्टेट सेवर्स. 7-14 जुलाई 2008 को न्यूजवीक मुद्रा
12. http://www.hinduonnet.com/2007/10/27/stories/2007102759600100.htm
13. "50% Bangalore kids hit by asthma". *The Times Of India*. 6 नवम्बर 2007.
14. http://www.all-about-india.com/
15. http://www.all-about-india.com/Environmental-issues-in-India.html
16. Yadav, Priya (Apr 2, 2009). "Uranium deforms kids in Faridkot". *The Times of India*.
17. "Children of uranium poisoning?". NDTV. September 6, 2009.
18. Jolly, Asit (2 अप्रैल 2009). "Punjab disability 'uranium link'". BBC News.
19. Chamberlain, Gethin (30 अगस्त 2009). "India's generation of children crippled by uranium waste". *The Telegraph* (London).
20. इंदिरा गांधी कंज़र्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर (आईजीसीएमसी (IGCMC)), नई दिल्ली और युनाइटेड नेशन इन्वाइरन्मेन्टल प्रोग्रैम (यूएनईपी (UNEP)), वर्ल्ड कंज़र्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर, कैंब्रिज, ब्रिटेन. 2001. *भारत के लिए जैव विविधता प्रोफ़ाइल.*

*** Corresponding Author:**

डा.हेमन्त मंगल, व्याख्याता एवं बंशीधर झाझड़िया, शोधार्थी

भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चुरू

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

Email – bansidharjhajhria@gmail.com, Mobile- 9664345535, 9828889286